Music Deptt
R. M. College Saral

कहा जाता है कि 17th century में पंडित सोमनाथ जी ने "राग तत्त्व विबोध" नामक ग्रंथ की रचना किए हैं। मुख्य रूप से इस ग्रंथ में वीणा की विभिन्न भेद और उप-भेदों पर प्रकाश डाला गया है। उन्होंने अपनी पूर्ववर्ती संगीत आचार्य रामामात्य का अनुसरण किया है, उन्होंने रुद्र वीणा के आधार पर अपने स्वरों की स्थापना किये हैं। रामामात्य ने केवल सात विकृत स्वरों का कल्पना किये थे लेकिन सोमनाथ ने कुल 10 विकृत स्वरों को माने हैं। सोमनाथ जी ने एक सप्तक के अन्तर्गत 22 संख्या पदों में से 3, 5, 9, 13, 16 18 22 संख्या पदों पर क्रमशः रे, ग, म, प ध, नि सा स्वरों की स्थापना किये हैं। सोमनाथ ने प्रथम श्रुति पर काकली निषाद, निषाद, द्वितीय श्रुति पर मृदु-षड्ज, चतुर्थ श्रुति पर तितृय श्रुति पर मृदु-षड्ज, चतुर्थ श्रुति पर षड्ज, सातवीं पर ऋषभ, आठवीं पर तीव्र ऋषभ ; नवीं पर गांधार, दशवीं पर साधारण गांधार, ग्यारहवीं पर अन्तर गांधार बारहवीं पर मृदु मध्यम, तेरहवीं पर मध्यम, चौदहवीं पर तीव्रतर मध्यम, पन्द्रहवीं पर तीव्रतम मध्यम सोलहवीं पर मृदु पंचम, बीसवीं पर धैवत तथा

इन्होंने मध्यम पर तीव्र धैवत तथा गान्धार पर निषाद स्वरों की स्थापना किये हैं,
उन्होंने अपने 75 रागों का वर्गीकरण 23 मेलों के अन्तर्गत किये हैं, वर्तमान समय में भी अनेक रागों का स्वरूप इन प्राचीन रागों के समान होते हैं। इस प्रकार ऐतिहासिक दृष्टिकोण से उत्तरी संगीतज्ञों के लिए विशेष महत्वपूर्ण ग्रन्थ है।

Scanned with CamScanner